

Think
IAS... 



 Think
Drishti

उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

विश्व का भूगोल



दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (*Distance Learning Programme*)

ANTARCTIC

Code: UKPM10



उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

विश्व का भूगोल



641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

1. भूगोल : उत्पत्ति एवं विकास	5–29
1.1 ब्रह्मांड	8
1.2 पृथ्वी की गतियाँ	17
1.3 अक्षांश और देशांतर	21
2. स्थलमंडल	30–109
2.1 पृथ्वी की उत्पत्ति व संकल्पनाएँ	30
2.2 पृथ्वी की भूगर्भिक समय-सारणी	33
2.3 पृथ्वी की आंतरिक संरचना	34
2.4 चट्टानें	39
2.5 भूसंचलन एवं संबंधित आकृतियाँ	43
2.6 महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत एवं सागर नितल प्रसरण सिद्धांत	63
2.7 प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत	65
2.8 भूकंप व सुनामी	69
2.9 ज्वालामुखी	75
2.10 महाद्वीप एवं प्रमुख प्रायद्वीप उच्चावच	84
3. जलमंडल	110–141
3.1 जलीय चक्र	110
3.2 महासागरीय नितल के उच्चावच	111
3.3 महासागरीय जल का तापमान	118
3.4 महासागरीय जल का घनत्व	119
3.5 महासागरीय जल में लवणता	121
3.6 महासागरीय निक्षेप	126
3.7 महासागरीय धाराएँ	127
3.8 प्रवाल तथा प्रवाल भित्ति	133
3.9 ज्वार-भाटा	134
3.10 सागरीय संसाधन	137

4. वायुमंडल	142–190
4.1 वायुमंडल का संघटन एवं संरचना	142
4.2 सूर्यातप एवं ऊष्मा संतुलन	148
4.3 वायुमंडलीय दाब	153
4.4 जेट स्ट्रीम	159
4.5 पवन संचार	161
4.6 वाताग्र, चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात	167
4.7 वायुमंडलीय आर्द्रता तथा वर्षण	173
4.8 जलवायु वर्गीकरण	182
5. जैवमंडल	191–200
5.1 विश्व की मिट्टियाँ	191
5.2 विश्व के प्रमुख बायोम	197
6. आर्थिक भूगोल	201–240
6.1 कृषि	201
6.2 पशुपालन एवं मत्स्यपालन	208
6.3 विश्व के खनिज संसाधन	210
6.4 विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	227
6.5 विश्व में परिवहन के प्रमुख साधन	231
7. मानव भूगोल	241–257
7.1 विश्व की प्रजातियाँ व जनजातियाँ	241
7.2 पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण	248
7.3 जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत	250
7.4 प्रवास	252
7.5 नगरीकरण	254
8. विश्व का महाद्वीपीय भूगोल	258–296
8.1 एशिया	258
8.2 यूरोप	263
8.3 अफ्रीका	270
8.4 उत्तरी अमेरिका	276
8.5 दक्षिण अमेरिका	283
8.6 ऑस्ट्रेलिया	288
8.7 अंटार्कटिका	291

सामान्य परिचय (General Introduction)

- ‘भूगोल’ (Geography) ग्रीक भाषा के दो शब्दों-‘जियो’ (Geo) (जिसका अर्थ है-‘पृथ्वी’) तथा ‘ग्रैफो’ (Graphos) (जिसका अर्थ है-‘वर्णन’) से मिलकर बना है, जिसका संयुक्त अर्थ है- ‘पृथ्वी का वर्णन’। पृथ्वी को सर्वदा मानव के आवास के रूप में देखा गया है और इस दृष्टि से विद्वान् भूगोल को “मानव के निवास के रूप में पृथ्वी का वर्णन” द्वारा परिभाषित करते हैं।
- दूसरे शब्दों में, “भूगोल विस्तृत पैमाने पर सभी भौतिक व मानवीय तथ्यों की अंतर्क्रियाओं और इन अंतर्क्रियाओं से उत्पन्न स्थलरूपों का अध्ययन करता है।” भूगोल बताता है कि कैसे, क्यों और कहाँ मानवीय व प्राकृतिक क्रियाकलापों का उद्भव होता है और कैसे ये क्रियाकलाप एक-दूसरे से अंतर्संबंधित हैं।
- भूगोल का एक अन्य पक्ष क्षेत्रीय विभिन्नता के कारकों या कारणों को समझने से संबंधित है कि किस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और जनान्कीकी कारक भौतिक स्थलस्वरूप को परिवर्तित कर रहे हैं और किस प्रकार मानवीय हस्तक्षेप के फलस्वरूप प्राचीन स्थलों का विलोपन और नवीन स्थलरूपों का निर्माण हो रहा है।
- संसाधनों के सतत रूप में प्रयोग व पर्यावरणीय प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जानकारी तथा यह समझने हेतु कि समस्याओं के समाधान में भूमि उपयोग योजना किस प्रकार सहायक हो सकती है, भूगोल का अध्ययन आवश्यक है।
- भूगोलवेत्ता प्रारंभ में भूगोल की वर्णनात्मक व्याख्या करते थे, बाद में यह विश्लेषणात्मक भूगोल के रूप में विकसित हुआ। आज यह विषय न केवल वर्णन करता है बल्कि विश्लेषण के साथ-साथ भविष्यवाणी भी करता है।
- ‘भूगोल’ (ज्योग्राफी) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ग्रीक विद्वान् ‘इरेटोस्थनीज (Eratosthenes)’ ने किया था, इसलिये उन्हें ‘भूगोल का पिता’ (Father of Geography) कहा जाता है।
- कुछ विद्वानों ने ‘हिकेटियस’ को भी ‘भूगोल का जनक’ माना है। हिकेटियस ने स्थल भाग को सागरों से घिरा माना तथा दो महादेशों का ज्ञान दिया।
- ‘आधुनिक भूगोल का जनक’ अलेक्जेंडर वॉन हंबोल्ट (Alexander Von Humboldt) को कहा जाता है। उन्होंने आधुनिक भूगोल का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक आधारों पर विकास किया।
- ‘कॉस्मॉस’ (Kosmos) हंबोल्ट की प्रसिद्ध रचना है। ‘समताप रेखा’ को मानचित्र पर दिखाने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे।



भूगोल से संबंधित परिभाषाएँ

- “भूगोल एक ऐसा स्वतंत्र विषय है, जिसका उद्देश्य लोगों को इस विश्व का, आकाशीय पिंडों का, स्थल, महासागर, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों, फलों तथा भू-धरातल के क्षेत्रों में देखी जाने वाली प्रत्येक अन्य वस्तु का ज्ञान प्राप्त कराना है।” -स्ट्रेबो
- “भूगोल पृथ्वी की झलक को स्वर्ग में देखने वाला आभामय विज्ञान है।” -टॉलेमै
- “भूगोल का उद्देश्य धरातल की प्रादेशिक/क्षेत्रीय भिन्नता का वर्णन एवं व्याख्या करना है।” -रिचर्ड हार्टशोर्न

भूगोल का विकास-क्रम (Evolution of Geography)

- प्राचीन समय में पृथ्वी संबंधी अधिकतर जानकारियाँ अन्य विषयों के विद्वानों से मिला करती थी, जैसे-
- ‘हिप्पोक्रेटस’ ने मनुष्य पर पर्यावरण के प्रभाव का वर्णन किया है।
- ‘अरस्तू’ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ‘पॉलिटिक्स’ में राज्य के गठन पर भौतिक कारकों के प्रभाव को स्पष्ट किया है।
- 18वीं शताब्दी में नवीन भौगोलिक भू-भागों तथा समुद्री मार्गों के अन्वेषण से सजीव भौगोलिक विवरणों का लेखन कार्य शुरू हुआ, क्योंकि इनसे यूरोपीय उपनिवेशों के विजय अभियान जुड़े हुए थे।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पृथ्वी एवं शुक्र का आकार लगभग बराबर है, अतः शुक्र को पृथ्वी का जुड़वाँ ग्रह (Twin Planet) कहते हैं।
- ‘वेस्टा’ एकमात्र क्षुद्र ग्रह है, जिसे नग्न आँखों से देखा जा सकता है।
- अरुण और शुक्र पूर्व से पश्चिम दिशा में घूर्णन करते हैं।
- सौरमंडल के ग्रहों का आकार को अनुसार बढ़ता क्रम - बुध (मरकरी), मंगल (मार्स), शुक्र (बीनस), पृथ्वी (अर्थ), वरुण (नेच्यून), अरुण (यूरेनस), शनि (सैटर्न), बृहस्पति (जूपिटर)।
- बुध और शुक्र का कोई उपग्रह नहीं है।
- सबसे चमकीला ग्रह शुक्र है, जिसे भोर या साँझ का तारा भी कहते हैं।
- सबसे कम कक्षीय काल (88 दिन) बुध ग्रह का है।
- मंगल ग्रह को लाल ग्रह भी कहा जाता है।
- निहारिका गैस और धूल कणों से मिलकर बना अत्यधिक प्रकाशमान आकाशीय पिंड है।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^\circ$ झुकी हुई है।
- विषुवत रेखा पर रात व दिन बराबर होते हैं।
- चंद्रमा पर गुरुत्वाकर्षण बल कम होता है, जिसके कारण वायुमंडल का अभाव होता है।
- शून्य डिग्री (0°) देशांतर रेखा को ‘प्रधान याम्योत्तर रेखा’ या ‘प्रधान मध्याह्न रेखा’ कहते हैं।
- चंद्रमा अपने अक्ष पर 5° झुका हुआ है।
- सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में हों तो इसे सिंजिगी कहते हैं।
- सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी के आने पर चंद्रग्रहण होता है।
- सूर्य और पृथ्वी के बीच चंद्रमा के आने पर सूर्यग्रहण होता है।
- पृथ्वी का अपने अक्ष पर धूमना परिभ्रमण या घूर्णन कहलाता है।
- 21 जून की स्थिति को ग्रीष्म अयनांत या कर्क संक्रांति कहते हैं।
- पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, इस सिद्धांत का प्रतिपादन कॉपरनिकस ने किया था।
- 22 दिसंबर की स्थिति को शीत अयनांत या मकर संक्रांति कहते हैं।
- पृथ्वी अपने कक्षीय तल पर $66\frac{1}{2}^\circ$ का कोण बनाती है।
- पृथ्वी की गणना जब तारों के संदर्भ में की जाती है, तब उसे नक्षत्र कहते हैं।
- पृथ्वी पर सबसे उच्चतम तापक्रम 25° उत्तरी अक्षांश पर रिकॉर्ड किया जाता है।
- $23\frac{1}{2}^\circ$ उत्तरी अक्षांश को कर्क रेखा कहते हैं। $23\frac{1}{2}^\circ$ दक्षिणी अक्षांश को मकर रेखा कहते हैं।
- 90° अक्षांश रेखा को छोड़कर प्रत्येक अक्षांश रेखा एक संपूर्ण वृत्त होता है।
- 0° अक्षांश रेखा पृथ्वी को दो भागों में विभाजित करती है। वहाँ सभी देशांतर रेखाएँ यह कार्य करती हैं, इसलिये इन्हें महान वृत्त (ग्रेट सर्किल) कहा जाता है।
- अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान के अंतर को तापांतर कहा जाता है।
- किसी स्थान के सर्वाधिक गर्म एवं सर्वाधिक ठंडे महीने के मध्यमान तापमान के अंतर को वार्षिक तापांतर कहा जाता है।
- भूमध्य रेखा पर लगभग संपूर्ण वर्ष सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं, इसलिये यहाँ पर सर्वाधिक न्यूनतम वार्षिक तापांतर पाया जाता है।
- ध्रूवों पर वार्षिक तापांतर सर्वाधिक पाया जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. पृथ्वी की भूमध्य रेखीय परिधि है लगभग—
UKPSC (Pre) 2016
 (a) 31,000 किमी. (b) 40,000 किमी.
 (c) 50,000 किमी. (d) 64,000 किमी.
2. निम्नलिखित में से कौन-सी एक समय की प्राकृतिक इकाई नहीं है?
UKPSC (Pre) 2016
 (a) उष्ण कटिबंधीय वर्ष (b) चंद्र मास
 (c) मानक समय (d) दिवस (दिन)
3. नासा का अंतरिक्षयान 'कैसीनी' किस ग्रह के मिशन पर है?
UKPSC (Pre) 2016
 (a) बृहस्पति (b) मंगल
 (c) शनि (d) शुक्र
4. पृथ्वी द्वारा अपनी कक्षा में सूर्य का एक पूरा चक्कर लगाने का समय है—
UKPSC (आबकारी विभाग) Pre 2015
 (a) 364 दिन 4 घंटे 40 मिनट 15 सेकंड
 (b) 364 दिन 2 घंटे 10 मिनट 09 सेकंड
 (c) 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट 46 सेकंड
 (d) 365 दिन 9 घंटे 50 मिनट 33 सेकंड
5. ग्रीनविच मानक समय और भारतीय समय में कितना अंतर होता है?
UKPSC (आबकारी विभाग) Pre 2015
 (a) $-5\frac{1}{4}$ घंटे (b) $+5\frac{1}{2}$ घंटे
 (c) $-5\frac{1}{2}$ घंटे (d) $+5\frac{1}{4}$ घंटे
6. पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। इसकी खोज की थी—
UKPSC (आबकारी विभाग) Pre 2015
 (a) कॉपरनिकस ने (b) केपलर ने
 (c) गैलिलियो ने (d) न्यूटन ने
7. निम्नलिखित में से किसे भूगोल का जनक कहा जाता है?
 (a) इरेटोस्थनीज़ (b) ए.वी. हंबोल्ट
 (c) ब्लाश (d) पी. हैगेट
8. चंद्रमा पर वायुमंडल उपस्थित नहीं है। इसका कारण यह है कि—
UKPSC (AE) Pre 2013
 (a) वहाँ गुरुत्वाकर्षण बल नहीं होता है।
 (b) गुरुत्वाकर्षण बल अपेक्षाकृत कम है।
 (c) गुरुत्वाकर्षण बल बहुत अधिक होता है।
 (d) चंद्रमा पर विभिन्न गैसों के अणु परस्पर विकर्षण (दूर धकेलते) करते हैं।

9. सौरमंडल में पृथ्वी की क्या हैसियत है?
UKPSC (AE) Pre 2013
 (a) एक उपग्रह की (b) एक गृह की
 (c) एक तारे की (d) एक पुच्छल तारे की
10. सूर्य में ऊर्जा उत्पादन की प्रक्रिया में होता है—
UKPSC (AE) Pre 2013
 (a) हाइड्रोजन का आक्सीकरण में परिवर्तन
 (b) कार्बन का हाइड्रोजन में परिवर्तन
 (c) हाइड्रोजन का हीलियम में परिवर्तन
 (d) हीलियम का हाइड्रोजन में परिवर्तन
11. निम्नलिखित में से कौन एक उपग्रह नहीं है?
UKPSC (Group B Screening) 2012
 (a) आर्थभट्ट (b) चंद्रमा
 (c) पृथ्वी (d) भास्कर
12. निम्नलिखित में से किसका अक्षांश 66.5° उत्तर है?
UKPSC (Group B Screening) 2012
 (a) आर्कटिक वृत्त (b) कर्क रेखा
 (c) मकर रेखा (d) अंटार्कटिक वृत्त
13. निम्नलिखित में किस दिन सूर्य और पृथ्वी के बीच सबसे कम दूरी होती है?
UKPSC (Pre) 2006
 (a) 22 दिसंबर (b) 21 जून
 (c) 22 सितंबर (d) 3 जनवरी
14. पृथ्वी का व्यास है—
UKPSC (Pre) 2006
 (a) 8,000 किमी. (b) 1,00,000 किमी.
 (c) 12,000 किमी. (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
15. सर्वाधिक उपग्रह वाला ग्रह है—
 (a) मंगल (b) बृहस्पति
 (c) शुक्र (d) शनि
16. महाविस्फोट सिद्धांत संबंधित है—
 (a) महाद्वीपीय विस्थापन से
 (b) ब्रह्मांड की उत्पत्ति से
 (c) हिमालय की उत्पत्ति से
 (d) ज्वालामुखियों के विस्फोट से
17. सूर्यग्रहण कब होता है?
 (a) सूर्य जब चंद्रमा व पृथ्वी के बीच आता है।
 (b) पृथ्वी जब सूर्य और चंद्रमा के बीच आती है।
 (c) चंद्रमा जब सूर्य व पृथ्वी के बीच आता है।
 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

18. दिन-रात जिस कारण होते हैं, वह है—
 (a) भू-परिक्रमण
 (b) भू-परिभ्रमण
 (c) पृथ्वी के अक्ष के झुकाव
 (d) चंद्रमा के परिक्रमण
19. किस ग्रह को पृथ्वी की बहन कहा जाता है?
 (a) बुध (b) शनि
 (c) मंगल (d) शुक्र
20. मंगल ग्रह का सबसे ऊँचा पर्वत कौन-सा है?
 (a) अरावली (b) निम्न ओलीपिया
 (c) पैंथर (d) नागटिब्बा
21. निम्नलिखित युगमों पर विचार कीजिये—
 (i) 0° देशांतर रेखा - अंतर्राष्ट्रीय तिथि
 (ii) 180° देशांतर - प्रथान मध्याह्न रेखा
 (iii) $23\frac{1}{2}^\circ$ उत्तरी अक्षांश - मकर रेखा
 (iv) $66\frac{1}{2}^\circ$ दक्षिणी अक्षांश - अंटार्कटिक वृत्त
 उपरोक्त में से कौन-सा/से युगम सही सुमेलित है/हैं?
 (a) केवल (i) और (iv)
 (b) केवल (i) और (iv)
 (c) केवल (iv)
 (d) केवल (ii) और (iii)
22. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये—
 (i) पृथ्वी की घूर्णन गति को वार्षिक गति कहते हैं।
 (ii) पृथ्वी का घूर्णन की गणना जब तारों के संदर्भ में की जाती है, तब उसे नक्षत्र दिवस कहते हैं।
 (iii) पृथ्वी का घूर्णन की गणना जब तारों के संदर्भ में की जाती है, तब उसे सौर दिवस कहते हैं।
 (iv) नक्षत्र दिवस का समय काल 24 घंटे होता है।
 उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/है?
 (a) केवल (i) और (iii)
 (b) केवल (i), (iii) और (iv)
 (c) केवल (i), (ii) और (iii)
 (d) केवल (i)
23. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये—
 (i) पृथ्वी के घूर्णन की गणना जब तारों के संदर्भ में की जाती है, तब उसे नक्षत्र दिवस कहते हैं।
 (ii) पृथ्वी के घूर्णन की गणना जब तारों के संदर्भ में की जाती है, तब उसे सौर दिवस कहते हैं।
 (iii) सौर दिवस का समय काल 24 घंटे होता है।
 (iv) नक्षत्र दिवस का समय काल 23 घंटे होता है।
 उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/है?
 (a) केवल (i) और (iii)
 (b) केवल (i), (iii) और (iv)
 (c) केवल (i), (ii) और (iii)
 (d) केवल (i)
24. किस ग्रह का कोई भी उपग्रह नहीं है?
 (a) शुक्र (b) शनि
 (c) बृहस्पति (d) पृथ्वी

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (c) | 4. (c) | 5. (b) | 6. (a) | 7. (a) | 8. (b) | 9. (b) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (a) | 13. (d) | 14. (c) | 15. (b) | 16. (b) | 17. (c) | 18. (b) | 19. (d) | 20. (b) |
| 21. (c) | 22. (d) | 23. (a) | 24. (a) | | | | | | |

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 20 शब्दों में दीजिये)

- | | |
|---------------------------------------|--------------------------------|
| (a) आर्कटिक वृत्त को परिभाषित कीजिये। | (d) अक्षांश रेखाएँ |
| (b) सूर्यग्रहण कब होता है? | (e) उपग्रह को परिभाषित कीजिये। |
| (c) घूर्णन गति किसे कहते हैं? | |

लघु एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50, 125 या 250 शब्दों में दीजिये)

- | | |
|--|---|
| 1. स्थानीय समय तथा मानक समय में अंतर स्पष्ट कीजिये। | 7. सौरमंडल के ग्रहों के बारे में सक्षिप्त वर्णन कीजिये। |
| 2. आकाशगंगा का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। | 8. क्रतु परिवर्तन की अवस्थाओं को स्पष्ट कीजिये। |
| 3. शुक्र एवं पृथ्वी ग्रह के बारे में संक्षिप्त वर्णन कीजिये। | 9. अक्षांश एवं देशांतर की विशेषताओं का वर्णन कीजिये। |
| 4. क्षुद्र ग्रह क्या है? परिभाषित कीजिये। | 10. घूर्णन गति एवं परिक्रमण गति की विशेषताओं का वर्णन कीजिये। |
| 5. 'विषुव' को परिभाषित कीजिये। | |
| 6. तारे के जन्म एवं विकास को स्पष्ट कीजिये। | |

किसी पथरीले ग्रह या प्राकृतिक उपग्रह की सबसे ऊपरी पथरीली या चट्टान निर्मित परत को स्थलमंडल कहते हैं। पृथ्वी के अंतर्गत स्थलमंडल में भू-पटल या क्रस्ट और मेंटल की सबसे ऊपरी परतें शामिल होती हैं। विभिन्न टुकड़ों में विभक्त होने के कारण इन्हें प्लेट कहा जाता है। स्थलमंडल धरातल पर पाए जाने वाले ठोस शैल पदार्थों की परतें हैं। इनका निर्माण तत्वों, खनिजों, शैलों तथा मृदाओं से हुआ है।

2.1 पृथ्वी की उत्पत्ति व संकल्पनाएँ (*Origin and Concepts of the Earth*)

- पृथ्वी की उत्पत्ति तथा उसकी आयु से संबंधित तथ्य अत्यंत रहस्यपूर्ण हैं और इन तथ्यों के समाधान के लिये विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न समय पर अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किये। प्रारंभ में संकल्पनाओं व सिद्धांतों का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा। कुछ समय बाद तर्कपूर्ण परिकल्पना के आधार पर इन सिद्धांतों ने अपना महत्व खो दिया।
- ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से पृथ्वी की उत्पत्ति संबंधी विचार, सिद्धांत तथा परिकल्पना अपनी अलग पहचान रखते हैं।
- पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में दो मत प्रचलित हैं। प्रथम धार्मिक संकल्पना तथा द्वितीय वैज्ञानिक संकल्पना।
- धार्मिक संकल्पना को वर्तमान वैज्ञानिक काल में मान्यता प्राप्त नहीं है क्योंकि इसके तर्क एवं विचारधाराएँ अपने महत्व को नहीं दर्शा पाए। यह पूरी तरह से परिकल्पनाओं पर आधारित विचारधारा थी, जो मान्य नहीं है।

वैज्ञानिक संकल्पनाएँ (*Scientific concept*)

- फ्राँसीसी वैज्ञानिक 'कास्ते द बफन' द्वारा सर्वप्रथम पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में तर्कपूर्ण परिकल्पना का विचार सन् 1749 में प्रस्तुत किया गया। इसके बाद विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व परिकल्पनाएँ तथा सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, परंतु किसी भी मत को पूर्णतया सही नहीं माना गया है।
- वर्तमान समय में वैज्ञानिक संकल्पनाओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है—
 - ◆ अद्वैतवादी संकल्पना (Monistic concept)
 - ◆ द्वैतवादी संकल्पना (Dualistic concept)

अद्वैतवादी संकल्पना (*Monistic concept*)

इस संकल्पना के अनुसार पृथ्वी तथा ग्रहों की उत्पत्ति केवल एक वस्तु (तारा) से हुई है। इस सिद्धांत को सुलझाने के लिये अनेक विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किये हैं। सर्वप्रथम प्रयास फ्राँसीसी वैज्ञानिक कास्ते द बफन द्वारा किया गया। इनके बाद इमैनुअल कांट, लाप्लास (Laplace), रॉस (Roche), लाकियर ने अपने मत प्रस्तुत किये। इनमें से दो संकल्पनाएँ (कांट और लाप्लास की) महत्वपूर्ण हैं।

अद्वैतवादी संकल्पना को **Parental hypothesis** भी कहा जाता है।

कांट की वायव्य राशि परिकल्पना (*Kant's gaseous hypothesis*)

पृथ्वी की उत्पत्ति के संदर्भ में 'वायव्य राशि परिकल्पना' का प्रतिपादन जर्मन दर्शनिक इमैनुअल कांट ने वर्ष 1755 में किया जो कि न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत पर आधारित थी।

- आरंभ में इस परिकल्पना की सराहना हुई परंतु बाद में इसे तर्कहीन प्रमाणित कर दिया गया। इस परिकल्पना में कांट ने गणित के गलत नियमों के आधार पर कल्पित किया था।
- इनके मत के अनुसार एक तप्त एवं गतिशील निहारिका (Nebula) से केंद्रापसारित बल (centrifugal force) के प्रभाव से नौ (9) गोल छल्ले अलग हो गए। धीरे-धीरे शीतलन के कारण एक छल्ले के सभी पदार्थ एकत्रित होकर ठोस हो

अध्याय 3

जलमंडल (Hydrosphere)

पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का लगभग 71% भाग जल के रूप में महासागरों, सागरों व खाड़ियों के अंतर्गत विस्तारित है, जिसे समग्र रूप में 'जलमंडल' कहा जाता है। पृथ्वी पर स्थानिक तौर पर जल का वितरण समान नहीं है। उत्तरी गोलार्द्ध में जहाँ स्थल की तुलनात्मक रूप से अधिकता है, वहाँ दक्षिणी गोलार्द्ध में जल की। पृथ्वी पर उपस्थित कुल जल का लगभग 97% जल महासागरों में है, जो खारा जल है अथवा पीने योग्य नहीं है। शेष लगभग 3% जल, जो ताजा एवं पीने योग्य है, हिमनियों (लगभग 2%), भौम जल, झीलों, नदियों आदि के अंतर्गत आता है।

जलस्रोत या जलभंडार	समस्त जलराशि का प्रतिशत
महासागर	97.25
हिमनियाँ एवं हिमटोपियाँ	2.05
भूमिगत जल	0.68
झीलें	0.01
मृदा में नमी	0.005
वायुमंडलीय नमी	0.001
नदियाँ	0.0001
जैवमंडलीय जल	0.00004

नोट: पृथ्वी पर जल के बाहुत्य के कारण ही इसे 'जलीय ग्रह' (Water planet) एवं अंतरिक्ष से नीला नज़र आने के कारण 'नीला ग्रह' (Blue planet) कहा जाता है।

3.1 जलीय चक्र (Hydrological Cycle)

- जल का इसके विभिन्न भौतिक रूपों (तरल, गैस एवं ठोस) में स्थलमंडल एवं जलमंडल, महाद्वीपों एवं महासागरों, धरातल एवं भूमिगत, वायुमंडल एवं जैवमंडल आदि के मध्य निरंतर प्रवाह एवं आदान-प्रदान को 'जलीय चक्र' कहते हैं।
- जल एक चक्रीय एवं नवीकरणीय संसाधन है अर्थात् प्राकृतिक रूप से इसकी प्रकृति इस तरह की है कि इसे प्रयोग एवं पुनःप्रयोग किया जा सकता है।
- यह पृथ्वी पर वायुमंडल एवं जलमंडल के विकास से लेकर कभी समाप्त न होने वाली व्यवस्था है। यह जैवमंडल का महत्वपूर्ण घटक है।

घटक	जल चक्र संबंधी प्रक्रियाएँ
महासागर, सागर, खाड़ियाँ, नदियाँ	वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन, ऊर्ध्वपातन
वायुमंडलीय नमी	संघनन, वर्षण
हिम रूप में	हिम पिघलने पर नदी-नालों के रूप में बहना
धरातलीय बहाव	जलधाराएँ, ताजा जल संग्रहण, जल रिसाव
भूमिगत जल	भौम जल का विसर्जन, झरनों के रूप में बहाव
जैवमंडल में जल	वनस्पतियों से वाष्पोत्सर्जन, जीवों द्वारा प्रयोग एवं पुनःप्रयोग

- जल चक्र यह उद्घाटित करता है कि जिस मात्रा एवं अनुपात में जल का वाष्पन (Evaporation) एवं वाष्पोत्सर्जन (Evapotranspiration) होता है, उसी मात्रा एवं अनुपात में 'वर्षण' (Precipitation) होता है। अर्थात् पृथ्वी पर नियमित कई भौगोलिक संतुलनकारी प्रक्रियाओं के अंतर्गत जल चक्र एक अतिमहत्वपूर्ण संतुलनकारी प्रक्रिया है।
- पृथ्वी पर तीव्र जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण, उपभोग वृद्धि, पर्यावरणीय हास एवं ताजे सीमित जलीय संसाधन की कमी से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

वायुमंडल विभिन्न प्रकार की गैसों का असमांगी मिश्रण है, जो पृथ्वी को चारों तरफ से आवृत अथवा ढँके हुए है। यह प्राकृतिक पर्यावरण तथा जीवमंडलीय परिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण संघटक है। वायुमंडल के द्वारा जीवमंडल के सभी जीवों एवं पादपों के अस्तित्व के लिये आवश्यक गैसों, ऊष्मा तथा जल की प्राप्ति होती है।

- वायुमंडल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उससे संबद्ध रहता है।
- वायुमंडल सौर विकिरण की लघु तरंगों के लिये पारदर्शी जबकि पार्थिव विकिरण की दीर्घ तरंगों के लिये अपारदर्शी का कार्य करता है। इस प्रकार यह विशाल ‘ग्लास हाउस’ की भाँति कार्य करता है। वायुमंडल पृथ्वी पर जीवन योग्य औसत तापमान (15°C) बनाए रखता है।
- वायुमंडल में उपस्थित ओज़ोन परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी सौर्यिक विकिरण तरंगों का अवशोषण करती है तथा धरातल को अत्यधिक गर्म होने से बचाती है।
- वायुमंडल पृथ्वी के ‘ऊष्मा बजट’ को संतुलित करता है। पृथ्वी की सभी मौसमी एवं जलवायविक प्रक्रिया इसी के द्वारा नियंत्रित, प्रभावित एवं संचालित होती हैं।

4.1 वायुमंडल का संघटन एवं संरचना (Composition and Structure of the Atmosphere)

वायुमंडल का संघटन (Composition of the atmosphere)

वायुमंडल का निर्माण तीन आधारभूत तत्त्वों अथवा संघटकों से मिलकर हुआ है— गैस, जलवाय्य तथा एयरोसॉल।

गैस (Gas)

पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से दो प्रकार की गैसें पाई जाती हैं—

- प्रथम, स्थायी प्रकृति की गैसें (जिनका अनुपात वायुमंडल में स्थायी रहे), जिनमें मुख्यतः नाइट्रोजन, ऑक्सीजन तथा आर्गन प्रमुख हैं।
- द्वितीय, अस्थायी (परिवर्तनशील) प्रकृति की गैसें, जिनमें जलवाय्य, कार्बन डाइऑक्साइड, ओज़ोन, हाइड्रोजन, हीलियम, जेनॉन, मीथेन इत्यादि प्रमुख हैं।
- वायुमंडल की ऊपरी परतों में गैसों का अनुपात बदलता रहता है, जैसे— कार्बन डाइऑक्साइड एवं जलवाय्य पृथ्वी की सतह से लगभग 90 किमी. की ऊँचाई तक ही पाए जाते हैं एवं ऑक्सीजन की मात्रा लगभग 120 किमी. की ऊँचाई पर नगण्य हो जाती है।

वायुमंडल में उपस्थित गैसें तथा उनकी मात्रा		
गैसों के नाम	रासायनिक सूत्र	प्रतिशत आयतन
नाइट्रोजन	N_2	78.08
ऑक्सीजन	O_2	20.95
आर्गन	Ar	0.93
कार्बन डाइऑक्साइड	CO_2	0.038
निअॉन	Ne	0.0018
हीलियम	He	0.0005
क्रिप्टॉन	Kr	0.0001
जेनॉन	Xe	0.00009
हाइड्रोजन	H_2	0.00005
मीथेन	CH_4	0.00017
ओज़ोन	O_3	0.000004
नाइट्रस ऑक्साइड	N_2O	0.00003

नोट: कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, धरातलीय ओज़ोन, जलवाय्य एवं मीथेन प्रमुख हरितगृह गैसें हैं।

- जलवाय्य, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड एवं ओज़ोन परिवर्तनीय गैसें हैं।
- वायुमंडल में जलवाय्य की मात्रा 0–4% होती है।

जैवमंडल पृथकी का वह भाग है जहाँ पर जीवन संभव होता है। यह पृथकी के तीन अजैव परिमंडलों, स्थलमंडल, वायुमंडल तथा जलमंडल के मिलन-स्थल पर होता है। दूसरे शब्दों में, यह तीन अजैव परिमंडलों के बीच होने वाली क्रियाओं का परिणाम है। जैवमंडल प्राणि जगत के लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि पृथकी पर रहने वाले सभी पशु-पक्षी एवं वनस्पतियाँ इसी मंडल में सम्मिलित हैं।

जैवमंडल का विस्तार क्षैतिज रूप से सारे धरातल पर तथा लंबवत् रूप से समुद्रों की गहराई से लेकर पर्वतों की ऊँचाई तक है। सौरमंडल में पृथकी ग्रह पर ही जैवमंडल पाया जाता है।

5.1 विश्व की मिट्टियाँ (*Soils of the World*)

मिट्टी या मृदा भूतल की ऊपरी परत होती है जिसका निर्माण चट्टानों के टूटने से, पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं के सड़े-गले अंश, जल, गैस तथा जीव-जंतुओं के अवशेषों के मिश्रण से होता है। इसे एक संसाधन माना जाता है, क्योंकि इसके निर्माण में काफी समय लगता है।

जे.एस. जोफे के अनुसार— “मिट्टियाँ, जंतु, खनिज एवं जैविक पदार्थों से बनी प्राकृतिक वस्तु होती हैं जो मोटाई के अनुसार विभिन्न मंडलों में विभक्त हैं। मृदा के संस्तर, आकारिकी, भौतिक एवं रासायनिक संघटन तथा जैविक विशेषताओं के दृष्टिकोण से नीचे स्थित पदार्थों से अलग होते हैं।”

मृदा निर्माण के कारक (*Factors of soil formation*)

मृदा के निर्माण में कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं।

आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ

मिट्टी के निचले भाग में पाए जाने वाले चट्टानी संस्तर को आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ कहते हैं। मिट्टी का निर्माण चट्टानों के भौतिक एवं रासायनिक अपक्षय के कारण होता है।

जलवायु

जलवायु मिट्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी निश्चित जलवायु वाले क्षेत्र में दो विभिन्न जनक पदार्थ एक ही प्रकार की मिट्टी का निर्माण करते हैं।

स्थलाकृति

उच्चावच, ऊँचाई या ढाल आदि स्थलाकृतियों के घटक के रूप में मिट्टी के जमाव तथा उसके अपरदन पर प्रभाव डालते हैं। तीव्र ढाल वाले क्षेत्रों में अपरदन की क्रियाएँ अधिक होती हैं जिसमें प्रायः मोटी मिट्टी की एक पतली परत रह जाती है। इसे अवशिष्ट मृदा कहते हैं।

जैविक पदार्थ

जैविक पदार्थों में वनस्पतियाँ, जीव-जंतु व मानवीय प्रभाव आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इन क्रियाओं द्वारा भी मिट्टी का विकास होता है।

विकास की अवधि अथवा समय

मिट्टी के निर्माण का कार्य बहुत मंद गति से होता है। समय बीतने के साथ मिट्टी के गुणों में भौतिक परिवर्तन आता रहता है। मिट्टी के विकास में तीन अवस्थाएँ शामिल होती हैं— (i) युवा अवस्था (ii) प्रौढ़ अवस्था (iii) जीर्ण अवस्था।

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल का एक प्रमुख अंग है जिसमें धरातल पर मानवीय आर्थिक क्रियाओं में अलग-अलग स्थानों पर पाई जाने वाली विभिन्नताओं को सम्मिलित किया जाता है। इन क्रियाओं में मृदा, जल, खनिज, ऊर्जा, जैविक तत्त्व आदि प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही पशुपालन, मत्स्यपालन, कृषि, परिवहन एवं संचार आदि शामिल हैं। आर्थिक संरचना संबंधी योजना भी भूगोल की शाखा है।

6.1 कृषि (Agriculture)

कृषि या खेती अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अंतर्गत विभिन्न फसलों एवं फलों, वनस्पतियों आदि को सम्मिलित किया जाता है। विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थितियाँ पाई जाती हैं। इस प्रकार कृषि की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न होती है। फलस्वरूप विश्व में फसलों का वितरण भी अलग-अलग होता है।

कृषि उत्पादकता (Agriculture productivity)

- बड़े कृषि क्षेत्रों में श्रम उत्पादकता ज्यादा रहती है परंतु जिन क्षेत्रों में सघन कृषि होती है उन क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर पैदावार ज्यादा होती है। इस प्रकार कृषि उत्पादकता का अर्थ प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति श्रमिक उत्पादन से है।
- इन दोनों स्थितियों में भारत में कृषि उत्पादकता में पिछड़ापन बना हुआ है। इसका मुख्य कारण कृषि पद्धति का पर्याप्त विकसित न हो पाना है, परंतु जिन क्षेत्रों में हरित क्रांति हुई थी उन क्षेत्रों की प्रति श्रमिक व प्रति हेक्टेयर उत्पादकता अधिक पाई जाती है।
- कृषि उत्पादकता में दो महत्वपूर्ण कारक शामिल होते हैं- भौतिक व गैर-भौतिक।
- जलवायु, मिट्टी व स्थलाकृतिक ढाल जैसी अन्य विशेषताएँ भौतिक कारकों में शामिल हैं, जबकि संस्थागत व संरचनात्मक तथा राजनीतिक प्रयास गैर-भौतिक कारकों में शामिल हैं।
- कृषि उत्पादकता में उत्पादन की अधिकता पर विशेष बल दिया जाता है।

शास्य गहनता (Crop intensification)

- एक वर्ष में कई फसलों को उगाना शास्य गहनता कहलाता है। इसे निम्नलिखित सूत्रों से दर्शाया जाता है-

$$\text{शास्य गहनता} = \frac{\text{सकल फसल क्षेत्र}}{\text{वास्तविक कृषि क्षेत्र}} \times 100$$

- यदि किसी कृषक के पास 10 हेक्टेयर कृषि भूमि है तथा वह खरीफ, रबी एवं जायद की फसलों में क्रमशः 10, 7 एवं 3 हेक्टेयर में कृषि करता हो तो-

$$\text{शास्य गहनता} = \frac{20}{10} \times 100 \text{ हो तो उसकी शास्य गहनता } 200 \text{ होगी।}$$

- फसल गहनता बढ़ाने के लिये सुव्यवस्थित सिंचाई, उर्वरक, मिश्रित फसल, कुशल यांत्रिकीकरण, उपयुक्त पौध सुरक्षा आदि उपाय किये जा सकते हैं।
- विश्व की प्रमुख फसलों की सामान्य जानकारी निम्नलिखित रूपों में प्राप्त की जा सकती है-

मानव भूगोल भूगोल की एक प्रमुख शाखा है जिसके अंतर्गत मानव की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल के अंतर्गत मानवीय तथ्यों, मानव व्यवसाय, पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण, विश्व की प्रजातियाँ व जनजातियाँ, प्रवास व स्थानांतरण, नगरीकरण आदि का अध्ययन समाहित होता है। यह पृथ्वी और मनुष्य के अंतर्संबंधों की एक नई संकल्पना प्रस्तुत करता है।

7.1 विश्व की प्रजातियाँ व जनजातियाँ (*Species and Tribes of the World*)

मानव प्रजाति से तात्पर्य उस मानव वर्ग से है जो वंशानुक्रम के द्वारा शारीरिक लक्षणों में समानता रखता है। यह एक जैविक उपचार है जिसका संबंध उस वर्ग से होता है, जिसमें जैविक रूप से कुछ समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। किसी भी मानव प्रजाति के शारीरिक लक्षण वंशानुक्रम द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी समान रहते हैं।

प्रजाति के लक्षण और वंशज गुण आनुवंशिकता के द्वारा संक्रमण करते रहते हैं। अतः वह मानव वर्ग जिसके सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना के लक्षण, जैसे-त्वचा का रंग, सिर की लंबाई एवं चौड़ाई, बाल, नाक का नुकीलापन या चपटापन, होंठों की मोटाई, रक्त वर्ग आदि एक जैसे हों, प्रजाति के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। ये विशेषताएँ जीन (Gene) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचालित होती हैं।

मानव विकास का क्रम (*Sequence of human development*)

आदिमानव से वर्तमान मानव के विकास का क्रम निम्नलिखित है—



मानव विकास का क्रम	विशेषताएँ
पिथेकैश्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> इसे आदिमानव समझा जाता है। पिथेकैश्रोपस शब्द का अर्थ सीधा खड़ा होने वाला मानव अर्थात् वानर मानव से है। यह वनमानुष एवं वर्तमान जीव के बीच की कड़ी है। इस मानव की हड्डियाँ जावा द्वीप पर पाई गई थीं।
सिनेनथ्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> यह आदिमानव के बाद का मानव था। इस मानव का मस्तिष्क वनमानुष की अपेक्षा बड़ा था। इस मानव के शरीर में कई परिवर्तन हुए।
हाइडिलबर्ग मानव	<ul style="list-style-type: none"> यह मानव वर्तमान मनुष्य से अधिक मिलता-जुलता है। हाइडिलबर्ग मानव प्लीस्टोसीन काल के प्रथम हिमयुग का है। जर्मनी के हाइडिलबर्ग के समीप इस मानव के जबड़े की हड्डियाँ मिली थीं।
रोडेशियन मानव	<ul style="list-style-type: none"> रोडेशियन मानव प्राचीन पूर्वज तथा वर्तमान मानव के बीच नस्ल का प्रतिनिधि है। रोडेशियन मानव के दाँत वर्तमान मानव के दाँतों के समान थे। इस मानव की हड्डियाँ अफ्रीका के रोडेशियन प्रांत में मिली थीं।

महाद्वीप और महासागर धरातल के प्रथम उच्चावच हैं। महाद्वीपों के निर्माण में प्लेटों की गति की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। सर्वप्रथम एंटोनियो स्नाइडर ने 1858 ई. में महाद्वीपों के प्रवाह की संभावना को व्यक्त किया था किंतु वेगनर महोदय ही सर्वप्रथम महाद्वीप व महासागर की उत्पत्ति की स्पष्ट व्याख्या देने में सफल हुए।

वेगनर के अनुसार कार्बोनीफेरस काल में सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे जिसे पेंजिया कहा गया तथा पेंजिया के चारों ओर स्थित विशाल सागर को पेंथालासा का नाम दिया गया। अंतिम-ट्रियासिक युग में पेंजिया का विभाजन प्रारंभ हुआ तथा वह दो भागों में बँट गया। इसका एक भाग उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे अंगारालैंड कहा गया तथा दूसरा भाग दक्षिण की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे गोंडवाना लैंड कहा गया।

अंतिम-क्रिटेशियस युग में गोंडवाना लैंड का भी विभाजन आरंभ हो गया, जिसके फलस्वरूप दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, प्रायद्वीपीय भारत, मेडागास्कर तथा ऑस्ट्रेलिया का निर्माण हुआ। अंगारालैंड के टूटने के कारण उत्तरी अमेरिका, यूरोप तथा एशिया बना। विस्थापन की इस प्रक्रिया में कई भौगोलिक व जलवायिक परिवर्तन देखने को मिले।



8.1 एशिया (Asia)

एशिया जनसंख्या व क्षेत्रफल, दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। एशिया को यूरोप से भूमध्य सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, यूराल पर्वत तथा डार्डेनेल्स व बॉसपोरस जलसंधियाँ अलग करती हैं, वहाँ बेरिंग जलसंधि इसे उत्तरी अमेरिका से अलग करती है।

लाल सागर तथा स्वेज जलडमरुमध्य एशिया को अफ्रीकी मुख्यभूमि से अलग करते हैं। एशिया महाद्वीप का अधिकांश भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है किंतु इंडोनेशिया के कुछ द्वीप दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित हैं।

- एशिया, नृजातीय विविधता के आधार पर एक संपन्न महाद्वीप है। यहाँ कॉकेसाइड, मंगोलॉइड, निग्रो व प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉइड प्रजाति के लोग निवास करते हैं।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com



641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456